बहेड़ा-रुट ट्रैनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

प्रजाति का नाम - बहेड़ा
वनस्पति का नाम- टरमेनेलिया बेलेरिका

परिचय

यह कॉम्ब्रिटेशी कुल का वृक्ष है। इसे बहेड़ा के नाम से भी जाना जाता है।

पहचान

इस वृक्ष की अधिकतम ऊँचाई 40 मीटर एवं 1.5 से 2.5 मीटर गोलाई वाला होता है। यह वृक्ष गहरे भूरे रंग की छाल के साथ साथ उस पर पाये जाने वाले काष्ठीय कांटे एवं पत्रक के ऊपर की तरफ जोडे में पाये जाने वाली ग्रंथियों के कारण पहचाना जाता है। इसके पत्ते लगभग 10 से 20 सेमी. तक लंबे तथा 06 से 09 सेमी तक चौडे होते हैं। इसका फल अण्डे के आकार का गोल और लंबाई में 03 सेमी तक होता है।

प्राप्ति स्थान

यह हर्रा की भांति भारत के लगभग सभी भाग में पाया जाता है इसके साथ - साथ यह प. बंगाल असम एवं दक्कन पठार पर हर्रा वृक्षों के साथ पाया जाता हैं। म.प्र. में यह सिवनी, सरगुजा, कोरबा, मण्डला, जबलपुर, बैतूल आदि।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

ह हर्रा वृक्ष की भांति लेटेराइट, रेतीली दोमट, काली कपासी एवं विभिन्न मृदा में पाया जाता है, जिसमें अधिक से अधिक जल धारण क्षमता होती है। यह प्रकाशपेक्षी एवं पाले के प्रति संवेदनशील परंतु सूखा प्रतिरोधी वृक्ष है।

बीज चक्र (Seed Cycle)

प्रतिवर्ष बीज उत्पादित होता है। परंतु एक वर्ष के अंतराल पर बीज का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

वृक्ष में मई से जून के मध्य फूल आते है। वृक्ष में नवम्बर से जनवरी माह के मध्य फल लगते हैं एवं फरवरी से मार्च में पक कर तैयार होते हैं। इसके फल अण्डाकार, धूसर रंग के एवं 12 से 15 मिमि. के होते हैं।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 400 से 450 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 09 से 12 माह होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी प्रकार की सुसुप्तावस्था नहीं पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता 40 से 60 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 35 से 45 प्रतिशत होता है।

उपयुक्त भंडारण विधि

पोलीथीन बैग में सिलिका जैल रसायन के साथ 1 से 1½ वर्ष तक जीवन क्षमता अवधि बढ़ाई जा सकती है।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के पश्चात् 06 से 09 माह के अंदर उपयोग में लिया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई के पूर्व 10% सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के साथ 10 मिनिट तक डुबोकर रखने पर अधिक अंकुरण प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

अधिक अंकुरण प्राप्ति हेतु उपयुक्त माध्यम रेत है।

बुआई का समय

बुवाई हेतु उपयुक्त समय मार्च से अप्रैल होता है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 500 से 600 ग्राम बीजों की आवश्यकता होती है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर उपरोक्त वर्णित उपचारण पश्चात् बुवाई करने पर सामान्य अंकुरण से 20 प्रतिशत अधिक अंकुरण प्राप्त होता है। परंतु रुट ट्रैनर मे पौध तैयारी के लिये उक्त उपचारण से सीधे बीज उपचारित कर रुट ट्रैनर मे भी बीज की बुवाई की जा सकती है।

Scanned with OKEN Scanner

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर उपरोक्त वर्णित उपचारण पश्चात् बुवाई करने पर सामान्य अंकुरण से 20 प्रतिशत अधिक अंकुरण प्राप्त होता है। परंतु रुट ट्रैनर मे पौध तैयारी के लिये उक्त उपचारण से सीधे बीज उपचारित कर रुट ट्रैनर मे भी बीज की बुवाई की जा सकती है।

रुट ट्रैनर में बीमारी एवं बचाव

रुट ट्रैनर में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज धूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है एवं किसी भी तरह की बामारी दिखने पर फफूंदनाशक बेविस्टीन एवं कीटनाशक दवा एण्डोसल्फान 0.1 % सांद्रता के घोल का छिड़काव समय - समय पर किया जाना अत्यंत आवश्यक है

रुट ट्रैनर का साइज

300 से 400 सीसी साइज के रुट ट्रैनर पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए उपयुक्त पाये गये।

पॉटिंग मिश्रण

विभिन्न रुट ट्रैनर साइजों में कुल 37 प्रकार के पोटिंग मिक्चर का प्रयोग किया

गया। जिसमें अधिकतम पौध वृद्धि रेत, मिट्टी एवं केचुआ खाद (1:1:1) के समान भाग का मिश्रण उपयोग मे लाने पर पायी गयी। अत: यह मिश्रण इस प्रजाति की पौध वृद्धि के लिये अत्यंत उपयोगी होगा।

रोपण हेतु पौध ऊँचाई / आयु

उपरोक्त साईज के रुट ट्रैनर मे तैयार 06 से 08 माह की आयु के पौधे रोपण हेतु उपयुक्त होते हैं। रोपण के समय पौधे की कुल लंबाई 84 से 92 सेमी या अधिक होनी चाहिए। रोपण के पश्चात् प्रारंभिक अवस्था में कुछ समय तक लगातार सिंचाई एवं निंदाई की आवश्यकता होती है।

उपयोग

लकड़ी जलाऊ लकड़ी के रूप मे एवं फल औषधीय में उपयोग किए जाते है। इसका प्रयोग त्रिफला, च्यवनप्राश आदि औषधि तैयार करने में भी किया जाता है। इसमें भी हर्रा की भांति फल की व्यवसायिक मांग अत्याधिक होने के कारण वन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरोत्पादन काफी कम देखा गया है।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

(0761) 2666529, 2665540

बहेड़ा

रूट ट्रेनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

(टरमेनेलिया बेलेरिका)

वन उत्पादकता प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

Scanned with OKEN Scanner